

Dr•Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja College Ara
Date; 31/10/2025
Class: U.G Semester - 3rd
(MJC-3)
Developmental Psychology,
Topic - निरीक्षण विधि (Observation Method)

अवलोकन अंग्रेजी भाषा के आबजरवेशन (Observation) का हिन्दी रूपान्तर है। शाब्दिक दृष्टि से इसका अर्थ है-देखना, प्रेक्षण, निरीक्षण या विचार। यह आब्जर्व शब्द से बना है जिसका अर्थ ध्यान देना, परीक्षा करना, अनुष्ठान करना आदि। इसका सीधा अर्थ आँखों से देखना लगाया जाता है। निरीक्षण विधि भी आत्मनिरीक्षण विधि की भांति पुरानी (प्राचीन) है। इस विधि को बहिर्मुखी अवलोकन, बहिर्दर्शन विधि, प्राकृतिक अवलोकन या अनियन्त्रित अवलोकन के नाम से भी जाना जाता है।

इस अवलोकन के दो भाग होते हैं- नियन्त्रित अवलोकन (Controlled observation) तथा अनियन्त्रित अवलोकन (Uncontrolled observation)। नियन्त्रित अवस्थाओं में अवलोकन नियन्त्रित अवलोकन कहलाता है। इसका दूसरा नाम प्रयोगात्मक अवलोकन भी है। अनियन्त्रित अवलोकन, प्राकृतिक अवलोकन कहलाता है। निरीक्षण, बहिर्दर्शन अथवा अवलोकन का शाब्दिक अर्थ है किसी वस्तु या क्रिया को देखना। मानव-व्यवहार के अध्ययन के सन्दर्भ में इसका अर्थ यह है कि मानव के बाह्य व्यवहार को देखना-समझना और उससे सम्बन्धित तथ्यों का पता लगाना।

पी.वी.यंग के अनुसार, 'अवलोकन नेत्रों के द्वारा किया गया विचारपूर्वक अध्ययन है, जिसका प्रयोग सामूहिक व्यवहार एवं जटिल सामाजिक संस्थानों के साथ-साथ सम्पूर्णता का निर्माण करने वाली पृथक-पृथक इकाइयों का सूक्ष्म निरीक्षण करने की एक पद्धति के रूप में किया जा सकता है।'

According to P.V. Young, "Observation is deliberate study through the eye that may be used as one of the methods for scrutinising collective behaviour and complex institutions as well as the separate units composing a totality."

सी.ए.मोसर के अनुसार, 'अवलोकन को सुन्दर ढंग के वैज्ञानिक जाँच-पड़ताल की पद्धति कहा जा सकता है। ठोस अर्थों में अवलोकन में कानों तथा वाणी की अपेक्षा आँखों का प्रयोग स्वतंत्र है।'

According to C.A. Moser (Survey Methods in Social Investigation 1958), "Observation can fairly be called the classic method of scientific enquiry in the strict sense, observation implies the use of the eyes rather than of the ears and the voice."

ऑक्सफोर्ड कन्साइज डिक्शनरी के अनुसार, घटनाओं को उसी प्रकार देखना और वर्णन करना जिस प्रकार के कार्य करण अथवा पारस्परिक सम्बन्धों के अनुसार स्वाभाविक रूप से घटते हैं।"

जहोदा एवं कुक के अनुसार, 'अवलोकन केवल दैनिक जीवन की ही अत्यधिक व्यापक क्रिया मात्र नहीं है, यह वैज्ञानिक जाँच का भी एक प्राथमिक यंत्र है।'

निरीक्षण के रूप (Forms of Observation)

कॉलसैनिक के अनुसार, "यह निरीक्षण दो रूपों में किया जाता है- एक औपचारिक रूप में (Formal Form) और दूसरा अनौपचारिक रूप में (Informal Form)"।

(1) औपचारिक निरीक्षण (Formal Observation)- औपचारिक निरीक्षण, वह निरीक्षण है जिसमें निरीक्षणकर्ता, (निरीक्षण करने वाला) प्रयोज्य (Subject) के व्यवहार का निरीक्षण नियंत्रित परिस्थितियों में योजनाबद्ध तरीके से सम्पादित करता है। इस निरीक्षण में प्रयोज्य को यह ज्ञात रहता है कि उसके व्यवहार का निरीक्षण किया जा रहा है। अतः इस स्थिति में प्रयोज्य अधिकतर कृत्रिम व्यवहार करते हैं।

(2) अनौपचारिक निरीक्षण (Informal Observation)- यह वह निरीक्षण है जिसमें निरीक्षणकर्ता, प्रयोज्य के व्यवहार का निरीक्षण बगैर किसी पूर्व निश्चित योजना के अनियन्त्रित परिस्थितियों में करता है। जिसके कारण इस निरीक्षण में व्यक्ति को यह ज्ञात नहीं होता है कि उसके व्यवहार का अवलोकन किया जा रहा है। अतः प्रयोज्य स्वाभाविक व्यवहार करता है। अतः उसके द्वारा कृत्रिम (बनावटी) व्यवहार करने का कोई प्रश्न नहीं उठता है।

निरीक्षण के चरण (Steps of Observation)

निरीक्षण के चरण निम्नलिखित हैं-

(1) योजना (Planning)- निरीक्षण करने से पूर्व निरीक्षणकर्ता को एक योजना का निर्माण कर लेना चाहिए। निरीक्षणकर्ता को योजना बनाते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

(i) निरीक्षण का उद्देश्य क्या है?

(ii) निरीक्षण का क्या समय है?

(iii) किस प्रकार के व्यवहार का निरीक्षण करना है?

(iv) निरीक्षण का क्षेत्र क्या है?

(v) निरीक्षण हेतु किन उपकरणों का प्रयोग किया जा रहा है?

(2) व्यवहार का निरीक्षण (Observation of Behaviour)-इस चरण के अन्तर्गत प्रत्यक्ष रूप से तथा पूर्व नियोजित उपकरणों एवं प्रविधियों के माध्यम से छात्रों के व्यवहारों का निरीक्षण किया जाता है। निरीक्षण करते समय यह अवश्य ध्यान रखें कि निरीक्षण किस उद्देश्य की पूर्ति हेतु किया जा रहा है।

(3) व्यवहार लेखन (Noting Down the Behaviour) - निरीक्षण का कार्य करते हुए निरीक्षित व्यवहारों को लिखते रहना चाहिए। व्यवहार को लिखने हेतु टेपरिकॉर्डर, कैमरा, पेन, डायरी तथा पेन्सिल का प्रयोग किया जाता है।

(4) विश्लेषण (Analysis)-छात्रों के व्यवहार से सम्बन्धित व्यवहार के निरीक्षण को लिखने के पश्चात् उसका विश्लेषण किया जाता है। यह विश्लेषण मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार का हो सकता है।

(5) व्याख्या और सारांश (Explanation and Summary) - निरीक्षण किए गए व्यवहार का विश्लेषण करने के पश्चात् उसकी व्याख्या की जाती है। विश्लेषण के दौरान विभिन्न सिद्धान्तों, कारणों आदि पर प्रकाश डाला जाता

है तथा प्राप्त किए परिणाम के आधार पर छात्रों के व्यवहार के उद्देश्य का सामान्यीकरण किया जाता है और सारांश लिखा जाता है। किए गए

निरीक्षण विधि के गुण **(Merits of Observation Method)**

यदि इस विधि का प्रयोग हम सावधानीपूर्वक करते हैं तो यह एक अत्यन्त अच्छी विधि साबित होती है।

(1) वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक (Objective and Scientific)-निरीक्षण विधि, आत्मनिरीक्षण विधि से अधिक वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक है।

(2) विश्वसनीय तथा प्रमाणिक (Reliable and Valid)- यह एक योजनाबद्ध विधि है यह अन्तर्दर्शन विधि की तुलना में अधिक वस्तुनिष्ठ, वैध तथा विश्वसनीय है।

(3) मितव्ययी (Economical)- निरीक्षण विधि अत्यंत संयमी विधि है क्योंकि इसमें प्रयोगशाला के कीमती उपकरणों की आवश्यकता ही नहीं होती है।

(4) लचीली (Flexible) - यह विधि अत्यंत लचीली विधियों की श्रेणी में गिनी जाती है तथा इस विधि का प्रयोग विभिन्न परिस्थितियों में तथ्यों को संग्रहित करने के लिए करते हैं।

(5) विभिन्न व्यक्तियों का व्यवहार (Behaviour of Different Individuals)-यह विधि व्यक्ति विशेष तथा व्यक्ति समूह, दोनों के ही व्यवहारों का अध्ययन करने में सक्षम है। इस विधि के माध्यम से व्यक्ति विशेष तथा व्यक्ति समूह के व्यवहारों का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है। साथ ही साथ इससे बच्चों, असाधारण मनुष्यों और जानवरों का व्यवहार देखने के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है।

(6) व्यक्ति तथा समूह का व्यवहार (Behaviour of Individual and Group)-इस विधि के द्वारा व्यक्ति तथा समूह के व्यवहार का निरीक्षण किया जा सकता है।

(7) प्रयोगात्मक विधि के लिए स्थान (Space for Experimental Method)- यह विधि प्रयोगात्मक विधि के लिए आधार प्रस्तुत करती है। क्योंकि प्रयोग कठोर, नियन्त्रित या प्रयोगशाला की परिस्थितियों में बहिर्मुखी अवलोकन के अलावा और कुछ भी नहीं होता।

(8) शिक्षा स्थितियों में लाभदायक (Useful in Educational Situations)- इस विधि की मदद से बच्चे के कमरे में पढ़ाई की निगरानी आसानी से की जा सकती है। समस्यात्मक बालकों, पिछड़े बालकों तथा प्रतिभाशाली बालकों का व्यवहार इस विधि के माध्यम से देखा जा सकता है तथा शिक्षा का परिणाम निकाला जा सकता है।

निरीक्षण विधि के दोष **(Demerits of Observation Method)**

इस विधि में अनेकोनेक गुण होने के बावजूद इस विधि की अपनी कुछ सीमाएँ या दोष भी हैं। जो निम्न हैं-

(1) अप्रशिक्षित निरीक्षक (Untrained Observer)- इस विधि में सही अवलोकन न करने के लिए प्रशिक्षित दर्शकों का मिलना कठिन है और अप्रशिक्षित दर्शक व्यर्थ तथा अनुचित तथ्यों को एकत्रित कर सकते हैं। अतः इस विधि का प्रयोग प्रशिक्षित एवं अनुभवी व्यक्ति ही कर सकते हैं।

(2) अन्तर्मुखी (Introvert)- यह विधि एक प्रकार से अन्तर्मुखी ही है। क्योंकि कभी-कभी दर्शक नर्म हो सकता है अर्थात् वह प्रयोज्य को रियायत दे देता है जबकि कभी-कभी वह कठोर हो जाता है और प्रयोज्य को किसी प्रकार की रियायत प्रदान नहीं कर सकता है।

(3) बनावटीपन (Artificiality)- औपचारिक निरीक्षण में चूँकि प्रयोज्य को यह ज्ञात होता है कि उसके व्यवहार का निरीक्षण किया जा रहा है अतः वह सावधान (सजग) हो जाता है और कृत्रिम व्यवहार करने लग जाता है। उस समय यह विधि अर्थहीन हो जाती है। इसके अलावा कई बार व्यवहार में स्वतः ही बनावटीपन आ जाता है, जैसे- स्त्रियों के व्यवहार में अजनबी को देखकर स्वतः बनावटीपन आ जाता है।

(4) व्यवहार घटित होने के लिए लम्बी प्रतीक्षा (Long Wait for Recurrence of Behaviour)- इस विधि में कई बार अमुक घटना के घटने के बाद उस घटना के पुनः घटने के लिए लम्बा इन्तजार करना पड़ता है, जैसे किसी बच्चे के क्रोध के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए हमें उसके पुनः क्रोध में आने की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

(5) व्यक्तिगत समस्याएँ (Personal Problems)- व्यक्ति की कुछ समस्याएँ तथा अनुभव ऐसे भी होते हैं जिन्हें देखा नहीं जा सकता है, जैसे लिंग अनुभव।

(6) आन्तरिक व्यवहार (Internal Behaviour) अवलोकन द्वारा किसी मनुष्य के आन्तरिक व्यवहार का पता नहीं कर सकते हैं क्योंकि किसी भी व्यक्ति के आन्तरिक व्यवहार को देखा नहीं जा सकता है।

(7) अचेतन मन (Unconscious Mind)- किसी भी व्यक्ति के अचेतन मन को हम निरीक्षण विधि द्वारा नहीं जान सकते हैं।

यद्यपि प्राकृतिक अवलोकन की विधियों में बहुत सी कमियाँ हैं परन्तु आज भी इसका प्रयोग शिशु-मनोविज्ञान तथा शिक्षा मनोविज्ञान में अधिक होता है। दूसरी ओर निरीक्षण विधि काफी सीमा तक वस्तुनिष्ठ, वैध तथा विश्वसनीय भी है। बशर्ते कि इस विधि में निरीक्षण क्रमबद्ध रूप में सावधानीपूर्वक किया जाए, तथा प्राप्त तथ्यों को सावधानीपूर्वक लिखा जाए और आँकड़ों का वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण किया जाए। यदि निरीक्षणकर्ता प्रयोज्य के व्यवहार को विडियों द्वारा रिकॉर्ड करके उसका धैर्यपूर्वक निरीक्षण करे तो यह विधि और अधिक उपयोगी साबित होगी।